RKSK
Rashtriya Kishor
Swasthya Karyakram
राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम

माधव और मुस्कान

मिलकर करते समस्या समाधान

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि राजू ने राजेश को धमकी देते हुए अकेले में बुलाया था। अब आगे पढ़ते हैं, क्या हुआ –

सच राजू, हम तुम्हारे दोस्त हैं, पक्के दोस्त। बताओ तो कि तुम स्कूल क्यों नहीं आ रहे ?
हमें नहीं तो फिर किसको बताओगे ?
मैंने बताया तो तुम सर को बताओगे। फिर सब डांटेंगे।
हम पर भरोसा रखो। दोस्ती का वादा। किसी से नहीं कहेंगे।
स्कूल में है न..... वो मुझे....
बोल न भाई, कोई मारता है क्या ?
नहीं। मैं स्कूल इसलिए नहीं जाता कि मुझे गणित बिलकुल समझ नहीं आता।
बस ! इतनी सी बात ?
ये इतनी सी बात है ? मैं छमाही की तरह फिर गणित में फेल हो गया तो ?
तो स्कूल न जाने से कौन सा पास हो जाओगे ?
सही हल के लिए जरूरी है समस्या का कारण पता हो।
सुई गिरी घर में और हम ढूंढ रहे आंगन में।
मतलब ?

मतलब यह कि तुम्हें गणित कैसे आए इस बारे में सोचो, स्कूल बंक मत करो।

कोशिश करोगे तो तुम्हें आ जाएगा।

पर कैसे?

मुझे भी जब कठिनाई होती है मैं जुनैद से पूछता हूं। वो पक्का है गणित में।

जुनैद से ? मुझे नहीं समझ आएगा, वो तो कितना कम बोलता है।

सुनो, तुम पड़ोस के अनिल भैया से पूछ सकते हो। वो तो इंजीनियरिंग की तैयारी कर रहे हैं न ?

हां, पर उनके पास समय नहीं होता है। कोचिंग जाते हैं वे।

पर मैंने देखा है, वो रविवार को अलग तरीके से गणित सिखाते हैं। हर बार कुछ नया करते हैं। हम चलेंगे इस रविवार।

आज मैं बोलूं पते की बात ?

चल आज तू ही बोल दे।

अपने खान सर स्कूल के बाद कठिन सवाल फिर से सिखाते हैं। तू रूककर पूछ लेना।

हां, यह ठीक रहेगा। पर इस रविवार को मैं तुम्हारे साथ चलूंगा। अनिल भैया के पास।

रविवार को अनिल भैया ने सड़क पर चित्र बनाकर सारणी समझाई। सब उनके आसपास खड़े देख रहे थे। समझाने के बाद भैया ने राजू और मुस्कान के प्रश्नों के जवाब भी दिए।

भैया, आज तो बहुत आसानी से समझ आ गया। स्कूल में यही कठिन लगता था।

सब कुछ आसान होता है जीवन में, बस तरीका समझ आने की देर है।

और बच्चों वादा करो, हर रविवार राजू को लेकर आओगे।
ये क्यों लाएंगे ? मैं खुद ही आऊंगा।

मैं कहूं पते की बात ? सब साथ में सीखेंगे तो बहुत मजा आएगा।

अनिल भैया हर बार नये तरीके से सिखाते हैं ?
हां, कभी माचिस की तीलियों से तो कभी कंकर–पत्थर से। खेल –खेल में ही सवाल हल।

आज तो मुझे गणित आसान लगने लगा।
देख, अच्छा हुआ ना जो तूने हमें बताया। अब राजू रोज स्कूल आना।
हां, हां,। अभी जाकर पापा को कहता हूं, मैं रोज स्कूल जाऊंगा।

चलो, राजू तो मान गया पर सरिता कल से स्कूल आएगी या नहीं ?
हां, पता नहीं उसकी मां भेजेगी या नहीं ?
क्या अगले दिन सरिता स्कूल आई होगी ?
उसके घर के कामों का क्या हुआ होगा ?
जानने के लिए पढ़िए अगला अंक ।

पढ़ी गई कहानी के अनुसार, हम कुछ मुद्दों पर चर्चा करेंगे:

समस्या को जानना

राजू ने स्कूल जाना क्यों बंद कर दिया था ?
उसने दोस्तों को समस्या क्या सोचकर बताई ?

विकल्पों की खोज करना

राजू की गणित न आने की समस्या के कौन-कौन से विकल्प सामने आए ?
राजू ने विकल्प का चुनाव किस आधार पर किया ?

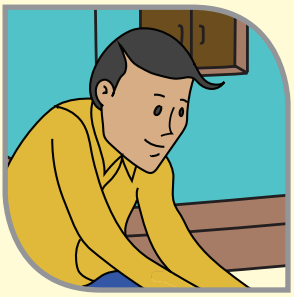

सृजनात्मक चिंतन

अनिल भैया सरल तरीके से गणित सिखाने के लिए किस तरीके का उपयोग करते थे ?

याद रखने वाले मुख्य संदेश

समालोचनात्मक चिंतन

❖ हर कही, सुनी या पढ़ी बात को आंख मूंदकर सच मान लेना सही नहीं है। जरूरी है कि हम इस प्रकार की जानकारी, परिस्थिति, बातों या घटनाओं आदि को जांचें, उनका मूल्यांकन करें और अपनी राय बनाएं।

❖ इस तरह सोच-विचार करने को समालोचनात्म चिंतन कहते हैं।

❖ समालोचनात्मक चिंतन की क्षमता विकसित करने और हमें मिली जानकारी व तथ्यों को परखने के लिए कुछ प्रक्रियाओं को अपनाना उपयोगी होगा –

❖ अपने समक्ष प्रस्तुत परिस्थिति या तथ्यों के बारे में और जानकारी एकत्रित करना।

❖ एकत्रित की गई जानकारी की जांच करना और उनके लिए सबूत तलाशना।

❖ विचार-विमर्श या चर्चा के समय भावनाओं के बजाए तर्क का उपयोग करना।

❖ यह पहचानना कि उस परिस्थिति का केवल कोई एक उत्तर संभव नहीं है बल्कि एक से ज्यादा जवाब हो सकते हैं।

❖ अलग-अलग जवाबों की तुलनाकर उनमें से सबसे उपयुक्त जवाब कौन सा है इस बात का मूल्यांकन करना।

समस्या समाधान

❖ समस्या उत्पन्न होने का कोई ना कोई कारण होता है अतः उसका समाधान भी उत्पन्न होने के कारणों के अनुरूप होना चाहिए।

❖ हर समस्या का कोई न कोई हल अवश्य निकलता है। कोई समस्या स्थाई नहीं होती।

❖ समस्या का उचित हल तलाथने के लिए पहले उसके कारणों को जानना जरूरी है।

❖ हल के रूप में उपलब्ध विकल्पों पर विचार करना चाहिए। समस्या के हल के लिए सृजनात्मक तरीके से सोचना चाहिए।

❖ यदि समस्या के विकल्प स्वयं न खोज सकें तो किसी की मदद लेना चाहिए।

❖ सारे विकल्पों पर विचार कर, सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चुनना चाहिए।

निर्णय लेना

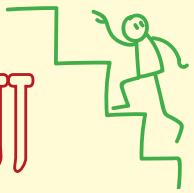

❖ निर्णय लेना समस्या समाधान का महत्वपूर्ण हिस्सा है। पर जरूरी नहीं कि सभी निर्णय समस्या के हल के लिए हों।

❖ निर्णय लेना एक कौथल है। मुद्दे के सभी पक्षों पर सोच-विचारकर निर्णय लेना चाहिए।

❖ जल्दबाजी में निर्णय लेना ठीक नहीं पर इतनी देर भी न हो कि निर्णय का कोई फायदा न मिले।

❖ निर्णय अपनी उम्र, कार्य, सामाजिक व आर्थिक स्थिति, उसके प्रभाव आदि को ध्यान में रखकर लिए जाने चाहिए।

❖ निर्णय ऐसे न लें जिन पर हमें बाद में पछतावा हो। अपने निर्णय पर हमें सदा गर्व हो, ऐसे निर्णय लिए जाने चाहिए।

साथिया

भूमिकाएं और जिम्मेदारियां

- आशा की सहायता से गांव में 10 से 19 वर्ष की आयु के सभी किशोर/किशोरियों की सूची तैयार करना।
- स्वास्थ्य एवं संरक्षण के मुद्दों के संबंध में मिथकों और भ्रांतियों को दूर करने में किशोर/किशोरियों की सहायता करना।
- आशा/ए.एन.एम. की सहायता से आवश्यकता पड़ने पर चिकित्सीय व सुरक्षा संबंधी जरुरत में दूसरी जगह रेफर करवाना।
- किशोर/किशोरियों की बातों की हमेशा गोपनीयता बनाए रखना।
- बच्चों और किशोर/किशोरी पर हिंसा के मामलों को पुलिस या बाल संरक्षण अधिकारी को सूचित करना।
- हिंसा के शिकार व्यक्ति की चिकित्सा देखभाल एवं परामर्श लेने और कानूनी सहायता हासिल करने में सहायता करना।
- धर्म, जाति, वर्ग, जेंडर या वैवाहिक स्थिति पर विचार किए बिना सभी किशोर/किशोरियों तक पहुंचना।

पहला अंक

दूसरा अंक

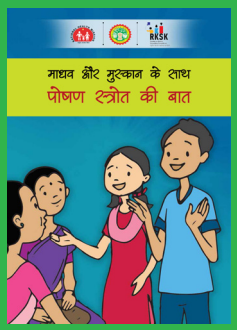

तीसरा अंक

चौथा अंक

पांचवां अंक

UNFPA